चार हजार में जीता था लोकसभा चुनाव

प्रखर गांधीवादी बाबू मूलचंद जैन 1952 में समालखा से विधानसभा चुनाव जीतकर पंजाब विधानसभा पहुंचे।1957 में उन्हें फिर से एसेंबली का टिकट दिया गया, लेकिन राजनीतिक परिस्थितियां ऐसी बनीं कि इच्छा होते हुए भी वे विधानसभा नहीं जा सके। हुआ यूं कि कांग्रेस ने कैथल लोकसभा क्षेत्र से राजकुमारी अमृत कौर को टिकट दिए जाने की घोषणा की। राजकुमारी ने कभी हरियाणा के इस हिस्से में काम नहीं किया था और खुद उनकी इच्छा पंजाब से चुनाव लड़ने की थी। लिहाजा, अमृत कौर ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया। ऐन मौके पर पार्टी ने बाबू

यादें

मूलचंद को कैथल से चुनाव लड़ने को कहा और अगले ही दिन जाकर नामांकन पत्र भरने के निर्देश दिए गए। श्री जैन इससे काफी खुश हुए और उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया। उस समय कैथल क्षेत्र में जींद तहसील व करनाल का निसिंग विधानसभा क्षेत्र भी शामिल था। बाबू जी ने अगले ही दिन जाकर अपना नामांकन पत्र भरा और चुनाव की तैयारी में जुट गए। इस चुनाव में बाबू मूलचंद एक लाख मतों से जीतकर लोकसभा पहुंचे। श्री जैन की यह जीत अपने आप में आश्चर्यजनक तो थी ही साथ ही साथ हैरानी की बात यह है कि इस चुनाव में उन्होंने 4,000 से भी कम रुपए खर्च किए थे। इतने बड़े क्षेत्र में इतने कम पैसे से चुनाव लड़कर जीत दर्ज करना ऐतिहासिक था। बाबू जी ने किसी प्रकार का तामझाम नहीं किया और सादगी से अपना प्रचार अभियान चलाया। उस समय मूलचंद जी ने माईक के एक-डेढ़ रुपए तक का खर्च भी अपनी डायरी में दर्ज किया था। उनकी डायरी में उनके पूरे सार्वजनिक जीवन और विभिन्न चुनावों का खर्च दर्ज है।

1957 के इस लोकसभा चुनाव में बाबू मूलचंद जैन ने 4,000 रुपए से भी कम राशि खर्च की, जिसमें से 3,000 रुपए पार्टी द्वारा दिया गया था। आजकल चुनाव में प्रत्याशी लाखों रुपए प्रतिदिन खर्च करते हैं और ऐसे में चार हजार में चुनाव जीतना अविश्वसनीय सा है।

● राममेहर अत्रि

Downloaded from moolchandjain.org